بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **08.12.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

मुसलमान दुनिया के लिए हमें दुआएँ करनी चाहिएँ कि संयुक्त हो जाए, अल्लाह उनको बुद्धि प्रदान करे, ये एक क़ौम बनकर रहने वाली हो, आपस की लड़ाई को रोक दें ताकि इस्लाम के दुश्मन अपना स्वार्थ प्राप्त न कर सकें।
और सबसे बढ़कर हमें यह दुआ करनी चाहिए कि मुसलमान अल्लाह तआला के भेजे हुए मसीह मौऊद और मेहदी मअहूद को पहचानें जिसके साथ जुड़कर ये आपस में भी तथा विश्व में भी शांति स्थापित करने वाले बन सकते हैं।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित आयत की तिलावत फ़रमाई-

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالۡبَنِيۡنَ وَالۡقَنَاطِيۡرِ الۡمُقَنۡطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالۡفِضَّةِ وَالۡخَيۡلِ الۡمُسَوَّمَةِ وَالۡاَنۡعَامِ وَالۡحَرۡثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنۡدَهٗ حُسۡنُ الۡمَاٰبِ

फ़रमाया- इस आयत का अनुवाद यह है कि लोगों के लिए प्रकृतिक रूप से रूचिकर वस्तुओं की अर्थात महिलाओं की तथा संतान की और ढेरों ढेर सोने चाँदी की तथा विशेष निशानों से चिन्हित किए हुए घोड़ों की और पशुओं की और खेतों से प्रेम, सुन्दर करके दिखाई गई है। यह सांसारिक जीवन के अस्थाई सामान हैं और अल्लाह वह है जिसके पास बड़ी अच्छी लौटने की जगह है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला ने यह चित्रण उन लोगों का किया है जो ख़ुदा तआला को भूल जाते हैं तथा भौतिकवाद ही उनका उद्देश्य होता है और जब इंसान ख़ुदा तआला को भूलता है तो फिर शैतान उसपर क़बज़ा कर लेता है। फ़रमाया- यद्यपि ये सारी वस्तुएँ ख़ुदा तआला के द्वारा पैदा की गईं हैं तथा अल्लाह तआला के वरदानों में से हैं तथा इनके द्वारा लाभान्वित भी होना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी हमें बड़े स्पष्ट रूप में फ़रमाया है कि दुनिया के कारोबार से अलग होना भी अनुचित है, विवाह करने भी आवश्यक हैं और यह सुन्नत है, सहाबा भी काम किया करते थे। कुछ सहाबा की करोड़ों रूपए की सम्पत्ति थी परन्तु वे संसार की ओर झुके हुए नहीं थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि याद रखो कि ख़ुदा का कदाचित यह आश्य नहीं कि तुम दुनिया को पूर्णतः त्याग दो अपतु उसका जो आश्य है, वह यह है कि قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰىهَا अर्थात जिसने आत्मा को पवित्र किया वह अपने उद्देश्य को पा गया। आप फ़रमाते हैं कि व्यापार करो, खेती करो, नौकरी करो तथा व्यवसाय करो, जो चाहो करो किन्तु आत्मा को ख़ुदा तआला की अवज्ञा से रोकते रहो तथा ऐसी पवित्रता प्राप्त करो कि ये बातें तुम्हें ख़ुदा तआला से वंचित न कर दें। एक स्थान पर आपने फ़रमाया कि आत्मा के अधिकार तो जायज़ हैं परन्तु आत्मा के असंतुलन उचित नहीं हैं। अतः यह बात सदैव एक मोमिन को अपने सामने रखनी चाहिए कि सांसारिक वस्तुओं से प्रेम ऐसा न हो जो ख़ुदा तआला को भुला दे, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ अर्थात- लोगों के लिए वासना से प्रेम सुन्दर करके दिखाया गया है तथा फिर आगे इसकी व्याख्या भी बयान कर दी है कि कौन कौन सी चीज़ें हैं। यहाँ उन मनुष्यों का वर्णन है जो संसार के प्रेम में डूबे हुए हैं तथा केवल उन वस्तुओं को प्राप्त करने की चिंता में हैं।

इसके बावजूद कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ऐसी सुन्दर एवं पवित्र शिक्षा दी है तथा सावधान भी किया है कि इन बातों से बचो अर्थात उस सीमा तक न जाओ कि ये केवल तुम्हारे जीवन का लक्ष्य बन जाए, क्यूँकि ये संसार के अस्थाई सामान हैं। अपनी चिंता करो कि तुमने ख़ुदा तआला की ओर लौटना है, उसके समक्ष उपस्थित होना है। फिर भी मुसलमानों की अधिकांश संख्या इन सांसारिक वस्तुओं के पीछे पड़ी हुई है तथा अपने जीवन के लक्ष्य को भूल गए हैं। आलिम भी, क़ौम के लीडर भी तथा प्रत्येक वह व्यक्ति जिसको अवसर मिलता है, उसका प्रयास होता है कि जैसे भी हो हम ये दुनिया की चीज़ें प्राप्त कर लें। जब ऐसी इच्छाएँ क़ौम के लीडरों में पैदा हो जाएँ तो फिर देशों और क़ौमों के हितों में हानि भी पैदा होना आरम्भ हो जाती है।

आजकल मुस्लिम देशों में विद्रोह की जो स्थिति है वह इस कारण से है कि अल्लाह तआला ने जो दीन से दूर हटे हुओं की तथा सांसारिक लोगों की स्थिति बताई थी वह मुसलमानों की है। लीडर हैं तो वे धन एकत्र करने के लिए जनता की सेवा का नारा लगाकर सरकार में आते हैं और फिर दोनों हाथों से वह लूट मचाते हैं कि कल्पना से बाहर है। आलिमों को जनता के दीन की चिंता कम है, असल प्रयास यह है कि दीन के नाम पर जनता को अपने पीछे चलाएँ तथा किसी प्रकार सरकार में आएँ अथवा सरकार से लाभ प्राप्त करें और दौलत एकत्र करें और सम्पत्तियाँ बनाएँ। नाम तो ये अल्लाह का लेते हैं परन्तु अल्लाह तआला के भय की कोई भी अभिव्यक्ति इनके कार्यों से नहीं हो रही होतीं। पाकिस्तान में हम साधारणतः यह स्थिति देखते हैं। मुसलमान लीडर, मुसलमान लोगों को गाजर मूली की भांति काट कर रहे हैं, कोई मूल्य नहीं है इंसान की जान का किन्तु हकूमत नहीं छोड़ते। कई देशों में ऐसी हरकतें हो रही हैं तथा प्रयास यह है कि हम हकूमतों में बैठे रहें तथा अपनी शक्ति का प्रदर्शन भी करते रहें और दौलत भी समेटते रहें। किसी प्रकार इनके पेट नहीं भरते। क्या कारण है कि बावजूद इसके कि मुस्लिम देशों के पास दौलत है, प्रकृतिक संसाधन हैं फिर भी ऐसी बुरी दशा है कि निर्धन और अधिक निर्धन होता जा रहा है तथा एक समय की रोटी भी कठिन है। अब सऊदी अरब को धनी देश कहा जाता है किन्तु वहाँ भी अब निर्धनता बढ़ती चली जा रही है। पहले भी निर्धन थे अब और बढ़ते चले जा रहे हैं। तेल की माया होने के बावजूद निर्धनता अपनी चरम सीमा पर है केवल राजकुमारों तथा लीडरों की दशा अच्छी है, एक एक दिन में कई कई मिलयन डालर ख़र्च कर देते हैं। ये लोग धन भी अनुचित साधनों से प्राप्त करते हैं अथवा निर्धन लोगों का अधिकार मार कर प्राप्त करते हैं तथा ख़र्च भी अनुचित रूप से करते हैं। अल्लाह तआला इन लोगों को, इन शासकों को, इन राजाओं को, इन स्वार्थी लोगों को बुद्धि प्रदान करे, वे दौलतें समेटने के बजाए दौलत का उचित उपयोग करने वाले हों। इससे जहाँ ये ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले होंगे वहाँ दुनिया की दृष्टि से भी इनकी एक शक्ति होगी। ग़ैर मुस्लिम शक्तियाँ इनको अपने पीछे चलाने के बजाए और आँखें दिखाने के बजाए इनकी बात सुनने वाली होंगी।

आजकल बड़ा शोर उठा हुआ है कि योरोशलम में अमरीका के सदर ने अपना दूतावास ले जाने को कहा है तथा उसे राजधानी स्वीकार करने की घोषण की है। वहाँ पहले से ही इस्राईल के कार्यालय मौजूद हैं किन्तु बाहर की दुनिया ने उसे स्वीकार नहीं किया था। अब इस घोषणा के पश्चात बाहर की दुनिया में बड़ा शोर है, सरकारें भी विरोध कर रही हैं किन्तु यह सब मुसलमानों की दुर्बल अवस्था के कारण से है। मुस्लिम देशों में परस्पर युद्ध हैं तथा देशों के भीतर जो उथल पुथल है उसने ग़ैरों को भी अवसर दिया है कि वे ये स्थिति उत्पन्न करें तथा इस प्रकार की घोषणा करें। अमरीकी सदर यह चाहता है कि मुसलमानों में आपस में अमन की स्थिति कभी स्थापित न हो तथा ये अपनी मन मानी करते रहें। सऊदी अरब अब यह घोषणा कर रहा है कि अमरीकी सदर का निर्णय किसी अवस्था में भी स्वीकारीय नहीं, कुछ दिन पूर्व हर बात में उसकी हाँ में हाँ मिला रहा था। ईरान के विरुद्ध घोषणा पर अमरीका की हाँ

में हाँ मिला रहा था, उस समय उसको रोकना चाहिए था कि हम हर मुसलमान देश के साथी हैं इस लिए किसी भी बड़ी शक्ति की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध किसी प्रकार की कार्यवाही हम सहन नहीं करेंगे। इसी प्रकार यमन के विरुद्ध जो कार्यवाही कर रहे हैं, उनमें भी बड़ी शक्तियों की सहायता ले रहे हैं तथा अमारीका के द्वारा लाभ प्राप्त करने के लिए उसकी हाँ में हाँ मिलाई। दुनिया के अस्थाई लाभ के लिए ख़ुदा तआला के आदेशों की अवहेलना कर दी, अब अल्लाह तआला के आदेशों की अवज्ञा का यही परिणाम लिकलना था जो निकल रहा है, फिर ये लोग सिर चढ़ते चले जाते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन लोगों का उदाहरण जो केवल दुनिया की तलाश में रहते हैं तथा भौतिकता की अभिलाषाओं को पूरा करने के प्रयास में रहते हैं, उस खुजली वाले रोगी से दी है जिसको खुजलाने से आनन्द मिलता है और वह अपने शरीर को खुजा कर यह समझ रहा होता है कि मुझे बड़ा आनन्द मिल रहा है तथा इस प्रकार वह अपने शरीर में घाव कर लेता है।

इस विषय को अल्लाह तआला ने दूसरे स्थान पर इस प्रकार बयान फ़रमाया है कि-

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَفِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ (सूरः अलहदीद, आयत 21)

अर्थात- जान लो कि दुनिया का जीवन केवल खेल कूद और मन की इच्छाओं को पूरा करने का ऐसा साधन है जो उच्चतम उद्देश्य से विमुख कर दे और सज धज तथा परस्पर एक दूसरे की तुलना में गर्व करना और माल तथा संतान में एक दूसरे से बढ़ने का प्रयास करना है। इस जीवन का उदाहरण उस वर्षा की भांति है जिसकी नमी काफ़िरों को लुभाती है, अतः वह तेज़ी से बढ़ती है फिर तू उसे पीला होते हुए देखता है फिर वह कण काण हो जाती है और आख़िरत में कठोर यातना निश्चित है तथा अल्लाह तआला की ओर से क्षमा एंव रिज़वान (प्रसन्नता) भी है जबकि दुनिया का जीवन तो केवल धोखे का एक अस्थाई सामान है। अतः एक मोमिन का काम है कि दुनिया के माल पर गर्व करने तथा उसकी प्राप्ति के लिए अपनी सम्पूर्ण क्षमता लगाने के बजाए अल्लाह तआला की क्षमा और प्रसन्नता तलाश करे तथा खुजली के रोगी के समान बनकर अपना जीवन और आख़िर नष्ट न करे।

इन सांसारिक जीवन के सामानों तथा इनकी दशा का चित्रण करते हुए एक मजलिस में एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जितना एक इंसान दुविधा से बचा हुआ हो उतनी ही उसकी अभिलाषाएँ पूरी होती हैं। फ़रमाया- दुविधा वाले के सीने में आग होती है तथा वह कठिनाई में पड़ा हुआ होता है। इस सांसारिक जीवन में यही आराम है कि दुविधा से मुक्ति हो। आप फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति घोड़े पर सवार होकर चला जाता था रास्ते में एक फ़क़ीर बैठा था जिसने बड़ी कठिनाई से केवल अपने शरीर का कुछ अंश ही कपड़े से ढका हुआ था। सवार ने पूछा कि साईं जी, क्या हाल है? फ़क़ीर ने उसे उत्तर दिया कि जिसकी सारी अभिलाषाएँ पूरी हो गईं हों उसकी दशा कैसी होती है। सवार को बड़ा आश्चर्य हुआ कि तुम्हारी सारी मुरादें किस प्रकार पूरी हो गईं। भिक्षुक ने कहा कि जब सारी मुरादें त्याग दें तो मानो कि सारी पूरी हो गईं। आप फ़रमाते हैं कि कहने का तात्पर्य यह है कि जब यह सब कुछ प्राप्त करना चाहता है तो दुविधा ही होती है किन्तु जब अल्लाह पर भरोसा करके सब कुछ छोड़ दे तो मानो सब कुछ मिलना होता है। फ़रमाते हैं कि निजात और मुक्ति यही है कि आनन्द हो, दुःख न हो। दुःख वाला जीवन तो न ही इस जहान में अच्छा होता है और न उस जहान में। आपने फ़रमाया कि यह जीवन जो हर हाल में समाप्त हो जाएगा क्यूँकि यह बर्फ़ के टुकड़ों के समान है चाहे इसे कैसे ही सन्दूक़ों और कपड़ों में लपेट कर रखो परन्तु वह पिघलती जाती है। अतः इस युवा अवस्था को वरदान समझना चाहिए, इस आराम से कोई लाभ नहीं है उसकी कल्पना से दुःख बढ़ता है, जब इंसान पिछले आराम से निकल जाता है। आप फ़रमाते हैं कि जब इंसान कई बार जिन दुःखों से भागना चाहता है, सहसा उनमें घिर जाता है और यदि संतान ठीक न हो तो और भी दुःख उठाता है। उस समय आभास होता है कि ग़लती की और आयु यूँ ही बीत गई, उस समय याद आता है कि अल्लाह तआला

के आदेशानुसार चलना ही अच्छा था तथा उसके अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहिए था, बजाए इसके कि दुनिया में पड़कर अल्लाह तआला को भूल जाए इंसान।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः एक मोमिन का काम है कि दुनिया की चिंता में पड़ने के बजाए अपनी आख़िरत को संवारने तथा ख़ुदा तआला की मुहब्बत को प्राप्त करने की चिंता करे, उसमें भरोसा पैदा हो, संसार के सामानों को अल्लाह तआला के वरदान समझते हुए उपयोग तो करे किन्तु उन्हें पूज्य न बनाए। पूज्य वही है जो हमारा वास्तविक पूज्य है, अल्लाह तआला से प्रेम ही इंसान में तक़्वा भी पैदा करता है तथा भरोसा भी पैदा करता है। अल्लाह तआला ने मोमिन की यही निशानी बताई है कि वे अल्लाह तआला से सबसे बढ़कर प्रेम करते हैं। अल्लाह तआला हममें यह भरोसा पैदा करे, दुनिया की चीज़ों से प्रेम के बजाए ख़ुदा तआला से प्रेम की प्राप्ति हमारा लक्ष्य हो तथा अल्लाह तआला की क्षमा और रिज़वान (सहमति) हम प्राप्त करने वाले हों।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मैं उस दुआ की ओर भी ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ जैसा कि मैंने पहले संक्षेप में वर्णन किया है कि मुस्लिम देशों के लीडर जो सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के पीछे पड़े हुए हैं तथा जिन्होंने व्यवहारिक रूप से ख़ुदा तआला के बजाए बड़ी शक्तियों को अपना ख़ुदा बनाया हुआ है तथा समझते हैं कि उनसे दोस्ती हमारे कल्याण और प्रगति का कारण बन सकती है, जबकि अमरीका के विषय में जर्मनी के एक टीकाकार ने लिखा है कि दुनिया जो वाशिंगटन को अपना मॉडल समझती है सम्भवतः उसकी अब वह छवि नहीं रही है क्यूँकि उसके स्थान पर अब बीजिंग जो चीन की राजधानी है, वह मॉडल बन रहा है। अमरीका अपनी साख खो चुका है तथा अपना स्थान खो चुका है। अतः दुनिया के सहारे तो अस्थाई सहारे हैं, आज आए कल चले गए। मुसलमानों को अब इससे समझना चाहिए। यह योरोशलम में जो दूतावास बनाने की घोषणा हुई है वह भी इसी कारण से की गई है कि इस प्रकार सम्भवतः इस्राईल के साथ अच्छे सम्बंध बन जाएँ और अधिक सुदृढ़ हो जाएँ तथा उसकी साख पुनः बन सके। परन्तु जब अल्लाह तआला की ओर से पतन आता है तो फिर दुनियावी दोस्तियाँ एवं समझौत काम नहीं आया करते। लगता है कि अब इन बड़ी शक्तियों पर, विशेष रूप से अमरीका पर भी यह काम आरम्भ हो चुका है और परिणाम कब निकलता है यह अल्लाह तआला ही भली भांति जानता है परन्तु मुसलमानों को आपस में लड़ाने का प्रयास अब इन परिस्थितयों में और अधिक तीव्रता के साथ होगा। इस लिए मुस्लिम दुनिया के लिए हमें दुआएँ करनी चाहिएँ कि अल्लाह तआला उन्हें बुद्धि प्रदान करे, अब ये संगठित हो जाएँ तथा विभिन्न देशों में जो युद्ध की सम्भावनाएँ हैं ये भी दूर हों तथा मुस्लिम देशों में जो आपस की लड़ाईयाँ हो रही हैं और लाखों जानें नष्ट हो चुकी हैं अल्लाह तआला उनको बुद्धि दे और ये एक क़ौम बनकर रहने वाली हों, आपस की लड़ाईयों को समाप्त करें ताकि इस्लाम के दुशमन अपना स्वार्थ प्राप्त न कर सकें और सबसे बढ़कर यह दुआ भी हमें करनी चाहिए कि मुसलमान अल्लाह तआला के भेजे हुए मसीह मौऊद और मेहदी मअहूद को पहचानें जिसके साथ जुड़कर ये आपस में भी दुनिया में भी, शांति स्थापना करने वाले बन सकते हैं।

TOLL FREE NO: 180030102131